



शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

अंक-५१ वर्ष-२०२५

माह जून



शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद



मिशन

शिक्षण

प्रकृति मित्र विशेषांक

संवाद



शिक्षण संवाद

वर्ष-२०२५
अंक-५१

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

माह- जून २०२५

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
आनन्द मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक
सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी,

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

तकनीकी सहयोगी
जितेन्द्र कुमार, अनिल मौर्य, विकास शर्मा

विशेष सहयोगी
विकास मिश्रा, अफज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला



**आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं**



व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं०

9458278429



ई मेल :

shikshansamvad@gmail.com



वेबसाइट :

www.missionshikshansamvad.com

‘शिक्षण संवाद’ जून 2025

शुभकामना सन्देश



साहित्य, शिक्षा, संस्कृति और विचारों की अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने वाला मिशन शिक्षण संवाद समूह का यह मासिक साहित्य संकलन निःसंदेह एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसके प्रत्येक अंक में समाहित लेख व रचनाएँ न केवल जानकारीप्रद होती हैं, बल्कि पाठकों को आत्मचिंतन, प्रेरणा और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध भी कराती हैं।

मिशन शिक्षण संवाद टीम का सतत परिश्रम, रचनात्मक दृष्टिकोण और उत्कृष्ट प्रस्तुति प्रशंसनीय है। आज के डिजिटल युग में भी ऐसी पत्रिकाएँ पाठकों को साहित्य और मूल्य आधारित जीवन से जोड़े रखने का कार्य कर रही हैं, जो अत्यंत सराहनीय है।

आपका यह साहित्यिक संकलन न केवल वर्तमान को आलोकित कर रहा है, बल्कि आने वाले समय के लिए भी आशा और संभावनाओं की नींव रख रहा है।

“विचारों की मशाल जब जलती है, तब अंधकार भी ज्ञान में बदल जाता है।”
“लेखन केवल शब्दों का संकलन नहीं, समाज के भविष्य को दिशा देने का माध्यम भी है।” “जहाँ सृजन होता है, वहाँ परिवर्तन अवश्य होता है।”

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह संकलन निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित करेगा और शिक्षा तथा समाज निर्माण में अपनी सशक्त भूमिका निभाता रहेगा। “शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण” इस आदर्श वाक्य के साथ मैं इस पत्रिका के नवीन अंक के प्रकाशन पर सम्पूर्ण संपादकीय टीम और समर्पित लेखकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

आपका यह प्रयास यँ ही फलदायी और समाज को आलोकित करने वाला बना रहे। सृजन पथ पर आपकी यह यात्रा निरंतर अग्रसर और सफल हो, यही हमारी कामना है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित



रीना रानी (स०अ०)

(राज्य अध्यापक पुरस्कार प्राप्त)

उच्च प्राथमिक विद्यालय शिकोहपुर

विकास क्षेत्र व जनपद— बागपत

‘शिक्षण संवाद’ जून 2025

■ सम्पादकीय



शिक्षण संवाद

हम सभी जानते हैं कि प्रकृति के अनेकों गुणों में समानता, विविधता एवं विरोधाभास जैसे महत्वपूर्ण गुण भी विद्यमान हैं, जिसके कारण प्रकृति अपनी गति को संतुलित बनाये रखने में अनन्त काल की साक्षी है। ठीक इसी तरह हम सभी मनुष्यों के बीच भी वैचारिक चिंतन आदि की विविधताओं, समानताओं और विरोधाभास देखने को मिलते हैं।

इसलिए यदि प्रकृति के नियमों और सिद्धांतों के अनुसार देखा जाये तो कोई भी दृष्टिकोण अथवा विचार असत्य नहीं था और न ही होता है। केवल समय, समझ और परिस्थितियों के कारण वही विचार या दृष्टिकोण किसी के लिए सत्य होता है और किसी के लिए असत्य लग सकता है। इसीलिए अपने को सही सिद्ध करने के लिए, दूसरे की उपेक्षा या बुराई करना न्याय संगत नहीं लगता है। जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण जीवन रक्षक एवं सत्य ज्ञान तक पहुँचने का श्रेष्ठ मार्ग है, लेकिन बिना जाने समझे अनुभव, अनुभूति और ज्ञान के यह कह देना कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण को श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, दया, करुणा तथा ईश्वरीय विधि विधान से नाता तोड़ लेना चाहिए। यह भी तो शायद गलत ही है। क्योंकि हो सकता है जो हमारे अनुभव, अनुभूति और ज्ञान के आधार पर असत्य है। वह किसी अन्य के अनुभव, अनुभूति और ज्ञान के अनुसार सत्य हो। इसलिए वैचारिक दृष्टिकोण के रूप में यह कहना तो उचित है कि मैं सत्य हूँ। लेकिन यह कहना सर्वथा असत्य हो सकता है कि मैं ही सत्य हूँ।

ऐसे ही अनेकों विचारों, दृष्टिकोणों और चिंतन के लिए जुड़े रहिए शिक्षा के उत्थान, शिक्षक के सम्मान और मानवता के कल्याण के लिए समर्पित "मिशन शिक्षण संवाद" से एवं पढ़ते रहिए मासिक संकलन "शिक्षण संवाद" को।

सादर धन्यवाद!



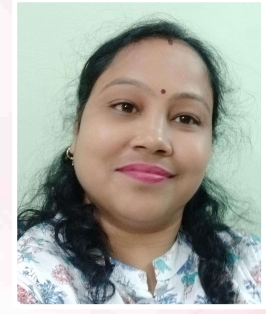
आपका
विमल कुमार

'शिक्षण संवाद' जून 2025

अनुक्रमिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	7
टी.एल.एम.संसार—मात्रा ज्ञान	8
बात महिला शिक्षकों की—आत्म सम्मान	9
प्रेरक—प्रसंग—चन्द्र शेखर आज़ाद	10-12
प्रेरक—प्रसंग—बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय	13-14
प्रेरक—प्रसंग—किरन बेदी	15
बाल कविता—प्रकृति	16
बाल कविता—नेक सीख	17
बाल कविता—श्री अटल बिहारी वाजपेई	18-19
दिवस विशेष—प्रकृति मित्र	20-23
दिवस विशेष—एक पेड़ माँ के नाम	24
दिवस विशेष—एक पेड़ माँ के नाम	25
दिवस विशेष—एक पेड़ माँ के नाम	26
बाल कविता—मेरा देश	27
बाल कविता—हिन्दी	28
बाल कविता—नवाचार की उड़ान	29
दिवस विशेष—विश्व रक्तदाता दिवस	30-31
नवाचार—एडीशन मशीन	32-33
बाल साहित्य—बिखरे मोती	34
बच्चों का कोना—पानी	35
खेल जगत—इंडोर शैणिक गतिविधियाँ	36-37
योग दिवस—21 जून	38-40

■ मिशन गीत



शिक्षण संवाद



साथ है जब मिशन ना रुकेंगे कदम
स्व प्रदेश को प्रेरक बना जायेंगे
जान प्यारी नहीं है मिशन के लिए
ज्ञान की वो अलख हम जगा जायेंगे
ए मिशन ए मिशन.....

हमने तय कर लिया हमने ले ली कसम,
ज्ञान से अपने सींचेंगे हिन्द का चमन।
साथ लेकर मिशन का हम यूं चल दिए,
आत्मविश्वास से हम भरेंगे बालमन।
साथ है जब मिशन ना रुकेंगे कदम
ज्ञान की जोत ऐसी जला जायेंगे
बच्चा बच्चा निपुण हो सके हिन्द का
शिक्षा की वो मशाल जला जायेंगे
ए मिशन ए मिशन.....

डॉ० शालिनी गुप्ता (स०अ०)
कपोजिट यूपीएस मुर्धवा
म्योरपुर, सोनभद्र

मात्रा ज्ञान

शिक्षण संवाद

TLM का नाम— मात्रा ज्ञान।
विषय— हिन्दी
कक्षा —प्राथमिक स्तर।

प्रयुक्त सामग्री—
रंगीन चार्ट पेपर ,फेवीकॉल
स्कैच पैन ,वेस्ट कार्ड बोर्ड।

लर्निंग आउटकम—
छात्र छात्राओं को मात्राओं के
विषय में जानकारी देना ।



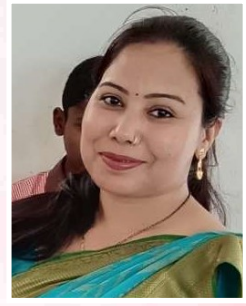
अफरोज जहाँ (स.अ.)

उच्च प्राथमिक विद्यालय कम्पोजिट टेढ़ा।
विकास खंड—सुमेरपुर, जनपद —हमीरपुर।

हिन्दी मात्रा चार्ट

अ ×	आ ा	इ ि	ई ी	
उ ु	ऊ ू	ऋ ृ	ए े	ऐ ै
ओ ो	औ ौ	अं ं	अः ः	

आत्म - सम्मान व आत्मप्रेम



शिक्षण संवाद

आज हम बात करेंगे आत्म प्रेम और आत्म सम्मान की। हम महिलाएँ जन्म से मृत्यु तक विभिन्न बंधनों और रिश्तों में बांधती ही चली जाती हैं। जब जन्म लेती हैं, तो एक बेटी व बहन का फर्ज निभाती हैं। इसके बाद एक पत्नी, बहू और माँ का फर्ज निभाती हैं। हमें बचपन से ही ऐसे संस्कार और शिक्षा दी जाती है कि कोई ऐसा काम न करो, जिससे दूसरे को बुरा लगे। सबका मान – सम्मान व इज्जत करो। हम महिलाएँ अपनी सभी ज़िम्मेदारियाँ व दायित्वों को बखूबी निभाती चली जाती हैं। इसी में हम अपनी खुशियाँ ढूँढती रहती हैं। हमारी पहचान बस एक बेटी, बहन, पत्नी और माँ के रूप में ही जानी जाती है और हम इन्हीं सारे रिश्तों को पूरी ईमानदारी व लगन के साथ निभाते हैं पर हमसे अगर कहीं पर भी एक चूक हो जाए या किसी काम में कमी रह जाए, तो यह समाज हमें जीने नहीं देता।

हम महिलाएँ अपनी त्याग, तपस्या व मेहनत के बल पर आज पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। इनके सभी कार्यों में बराबर सहयोग व समर्थन कर रही हैं। पर हमारी एक छोटी सी ग़लती पर हमारे बुद्धि, विवेक पर प्रश्न चिन्ह उठाए जाते हैं। हम महिलाओं में शक्ति व सहनशीलता इतनी ज़्यादा होती है कि हम किसी की भी बड़ी से बड़ी ग़लती को माफ़ कर आगे बढ़ जाती हैं। घर – परिवार व ज़िम्मेदारियों के बीच कहीं ना कहीं हम सिमट कर रह जाती हैं और अपना खुद का अस्तित्व ही खो बैठती हैं।

देश बदल रहा है, समाज बदल रहा है बस बदलना सिर्फ हम महिलाओं को है। आप अपने सभी दायित्वों को निभाएँ, सभी का मान – सम्मान करिए। पर अपने आत्मसम्मान को हमेशा बचाए रखिए। अपनी सभी ज़िम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए अपने अंदर आत्म प्रेम को भी जागृत रखें। इससे आत्मविश्वास बढ़ेगा। क्योंकि जब हम खुश और स्वस्थ रहेंगे तभी हम अपने आस-पास एक खुशहाल व स्वस्थ वातावरण का निर्माण करेंगे। जितने लोग हमारे संपर्क में आएँगे, वह भी एक प्रकार की ऊर्जा को महसूस करेंगे। इसी से एक स्वस्थ और खुशहाल समाज का निर्माण होगा।

रीता,

सहायक अध्यापक, विज्ञान शिक्षक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय फतनपुर,
विकास खण्ड- गौरा,
जनपद- प्रतापगढ़।



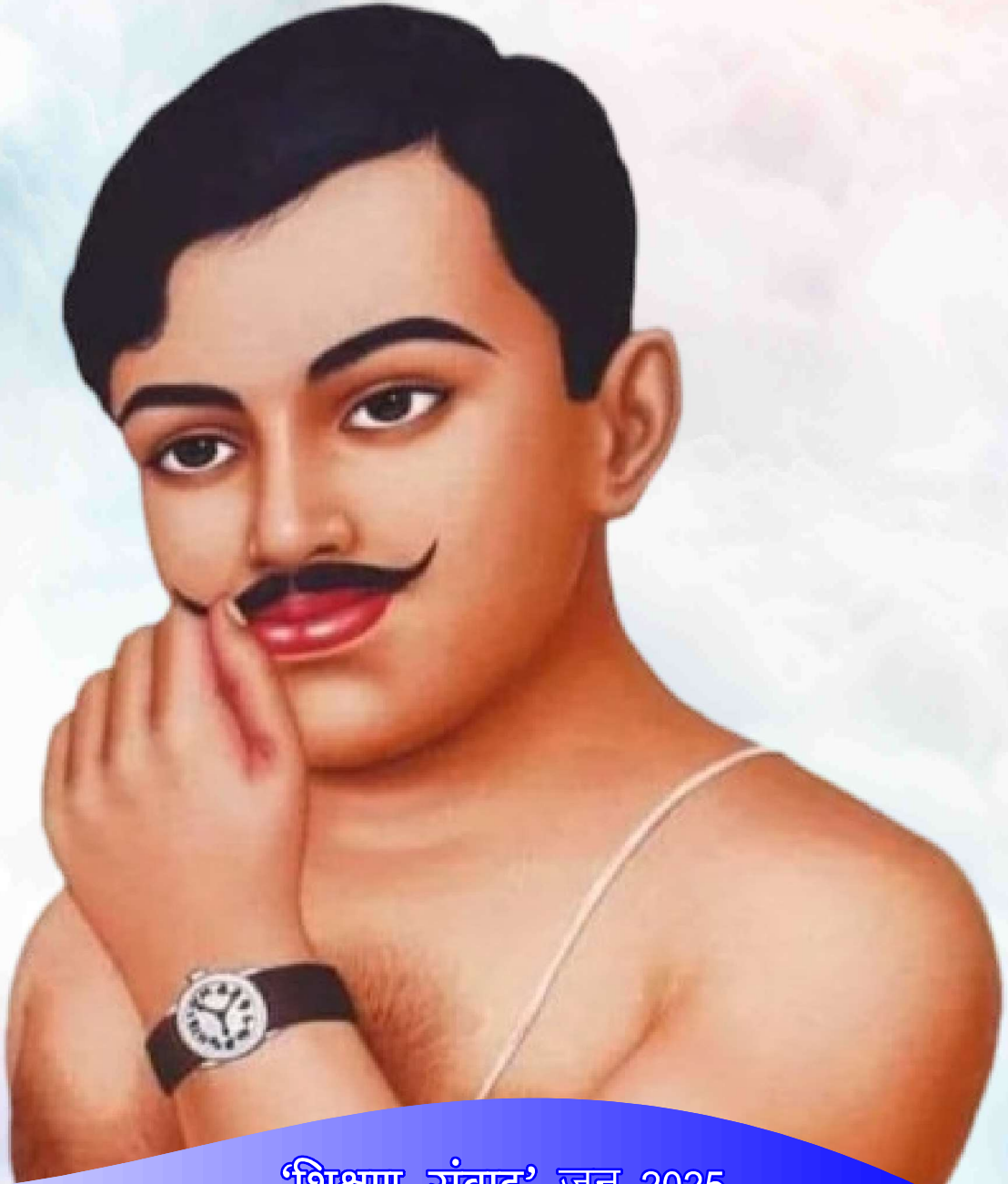


चन्द्रशेखर आज़ाद

शिक्षण संवाद

चन्द्रशेखर आज़ाद (23 जुलाई 1906 से 27 फ़रवरी 1931) भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के स्वतंत्रता सेनानी थे। वे शहीद राम प्रसाद बिस्मिल व शहीद भगत सिंह सरीखे क्रान्तिकारियों के अनन्यतम साथियों में से थे।

चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को अलीराजपुर रियासत के कन्याकुब्ज ब्राह्मण परिवार में भाभरा गाँव में चन्द्रशेखर तिवारी के रूप में हुआ था।



उनके पूर्वज उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के बदरका गाँव से थे। उनके पिता का नाम सीताराम तिवारी तथा माँ का नाम जगरानी देवी था। आज़ाद का प्रारम्भिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गाँव में बीता अतएव बचपन में आज़ाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष-बाण चलाये। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आज़ाद का मन अब देश को आज़ाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। वे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़कर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य बन गये।

चंद्रशेखर आज़ाद का जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक चमकता हुआ अध्याय है। उनके जीवन में कई प्रेरणादायक प्रसंग हैं। जो आज भी युवाओं को साहस, देशभक्ति और आत्मबलिदान की प्रेरणा देते हैं। नीचे उनके कुछ प्रमुख प्रेरक प्रसंग दिए गए हैं—

बालक उम्र में गिरफ्तारी और वीरता

जब चंद्रशेखर केवल 15 वर्ष के थे, तब उन्होंने गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया। उन्हें ब्रिटिश पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और अदालत में पेश किया गया। न्यायाधीश ने उनका नाम पूछा, तो उन्होंने साहसपूर्वक जवाब दिया— नाम— आज़ाद, पिता का नाम— स्वतंत्रता, पता— जेल। यह उत्तर उनके अडिग साहस और देशभक्ति की पहली झलक थी।

क्रान्तिकारी संगठन से जुड़ाव

गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन वापस लेने पर चंद्रशेखर निराश हुए और उन्होंने हथियारबंद क्रान्ति का रास्ता चुना। वे हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) से जुड़ गए और भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों के साथ ब्रिटिश राज को उखाड़ फेंकने की योजना में जुट गए।

काकोरी कांड में भागीदारी

1925 के काकोरी कांड में उन्होंने अंग्रेजों की ट्रेन से सरकारी खज़ाना लूटा ताकि क्रांतिकारी गतिविधियों को आर्थिक सहयोग मिल सके। यह घटना ब्रिटिश सत्ता को हिला देने वाली थी और आज़ाद की वीरता का उदाहरण बनी।

लालाजी की मौत का बदला

लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिए चंद्रशेखर आज़ाद और भगत सिंह ने सांडर्स हत्याकांड को अंजाम दिया। उन्होंने लाठीचार्ज के उत्तरदायी अफ़सर को मार गिराया।

अंतिम क्षण – “आज़ाद” की कसम

27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ़्रेड पार्क में पुलिस ने उन्हें घेर लिया। उन्होंने वीरता से मुकाबला किया और जब उनके पास अंतिम गोली बची, तो उन्होंने उसे खुद को मारने में इस्तेमाल किया। उनकी कसम थी कि वह कभी अंग्रेजों के हाथ नहीं आएंगे – और उन्होंने यह कसम अंत तक निभायी।

आज भी प्रेरणा स्रोत

चंद्रशेखर आज़ाद का जीवन संदेश देता है कि सच्चे देशभक्त कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते। उनका आत्मबलिदान भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। नारों में जीवित हैं आज भी—

**“दुश्मन की गोलियों का, हम सामना करेंगे,
आज़ाद ही रहे हैं, आज़ाद ही रहेंगे!”**

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
पी० एम० श्री प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर—1
वि० क्षे० व जनपद— बागपत

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के विचार



शिक्षण संवाद

बंकिम चंद्र चटर्जी एक महान बंगाली उपन्यासकार, कवि और पत्रकार थे। जिन्होंने बंगाली साहित्य और भारतीय राष्ट्रवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका जन्म 27 जून 1838 को पश्चिम बंगाल के 24 परगना ज़िले के कांठलपाड़ा गाँव में हुआ था। बंकिम चंद्र चटर्जी की शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय में हुई थी। उन्होंने सरकारी सेवा में भी काम किया। वह भारत के राष्ट्रीय गीत “वंदे मातरम” के रचयिता हैं, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों का प्रेरणास्रोत बन गया था।

शैक्षिक विचार—

देशभक्ति और राष्ट्रवाद— बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने साहित्य के माध्यम से देशभक्ति और राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा दिया। उनका प्रसिद्ध गीत “वंदे मातरम” भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक बन गया।

सामाजिक सुधार— उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विधवा विवाह, महिलाओं की स्वतंत्रता और अंधी अंग्रेज़ी नकल का विरोध किया।

शिक्षा और साहित्य— बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने बंगाली भाषा में लिखने के महत्व पर ज़ोर दिया, ताकि उच्च वर्ग और आम लोगों के बीच की खाई को पाटा जा सके। उन्होंने “बंगदर्शन” पत्रिका की स्थापना की, जो बंगाली साहित्य और राष्ट्रवाद के उद्भव में प्रभावशाली थी।



भारतीय संस्कृति का महत्व— उन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के महत्व पर बल दिया और ब्रिटिश शासन के दौरान इसके शोषण की आलोचना की।

स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता— बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने साहित्य में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना को बढ़ावा दिया। उनके उपन्यास “आनंदमठ” में संन्यासी विद्रोह की कहानी है, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई का प्रतीक है।

शिक्षा संबंधी विचार—

शिक्षा का महत्व— बंकिम चंद्र चटर्जी ने शिक्षा को जीवन का आधार माना है। उनका मानना है कि “शिक्षा ही जीवन का आधार है”।

ज्ञान की शक्ति— वे ज्ञान को एक शक्ति मानते हैं और विद्या को धन से बड़ा मानते हैं। उनका कहना है कि “ज्ञान एक शक्ति है और विद्या धन से बड़ी होती है”।

चरित्र निर्माण— बंकिम चंद्र चटर्जी ने चरित्र निर्माण पर जोर दिया है। उनका मानना है कि “चरित्र ही मनुष्य का असली आभूषण है”।

अनुशासन— वे अनुशासन को सफलता का मार्ग मानते हैं। उनका कहना है कि “अनुशासन ही सफलता का मार्ग है”।

एकता— बंकिम चंद्र चटर्जी ने एकता के महत्व पर भी जोर दिया है। उनका मानना है कि “एकता ही शक्ति है”।

साहित्य का उद्देश्य— वे साहित्य को मनुष्य को मनुष्य बनाने का साधन मानते हैं। उनका कहना है कि “साहित्य का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना है”।

इन विचारों से स्पष्ट होता है कि बंकिम चंद्र चटर्जी शिक्षा को न केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन मानते थे, बल्कि चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास का भी महत्वपूर्ण हिस्सा मानते थे।

प्रमुख रचनाएँ—

उपन्यास—दुर्गेशनंदिनी (1865), कपालकुंडला (1866), मृणालिनी (1869), आनंदमठ (1882), देवी चौधरानी (1884), प्रबन्ध ग्रन्थ, कमलाकान्तेर दफ़तर, लोकरहस्य, कृष्ण चरित्र, अन्य रचनाएँ, वंदे मातरम, ललिता (पुराकालिक गल्प), धर्मत्व। बंकिम चंद्र चटर्जी बंगाली साहित्य के एक प्रमुख व्यक्ति थे और उनकी रचनाओं ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला है।

रविन्द्र कुमार पटेल (स. अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ
वि.ख.— औराई, जनपद — भदोही



किरण बेदी, भारत की पहली महिला भारतीय पुलिस सेवा (IPS) अधिकारी, साहस, दृढ़ संकल्प और नवाचार का पर्याय हैं। उनका जीवन कई प्रेरक प्रसंगों से भरा है, जो दर्शाते हैं कि कैसे एक व्यक्ति अपने निश्चय और ईमानदारी से समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

1. 'क्रेन बेदी' उपनाम— निडरता का प्रतीक

दिल्ली में ट्रैफिक कमिश्नर के तौर पर अपने कार्यकाल के दौरान, किरण बेदी ने अनुशासित और नियम-पालन करने वाले यातायात व्यवस्था की स्थापना के लिए कड़े कदम उठाए। उन्होंने गलत जगह पार्क की गई गाड़ियों को, चाहे वह किसी भी प्रभावशाली व्यक्ति की हों, क्रेन से उठवा लिया। इसमें प्रधानमंत्री कार्यालय की गाड़ी भी शामिल थी। उनकी इस निडरता और निष्पक्ष कार्रवाई के कारण उन्हें 'क्रेन बेदी' का उपनाम मिला। यह घटना दर्शाती है कि कानून सबके लिए समान है और नियमों का पालन सभी को करना चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।

2. तिहाड़ जेल सुधार:— एक मानवीय दृष्टिकोण

तिहाड़ जेल की महानिरीक्षक (IG) के रूप में किरण बेदी का कार्यकाल उनके मानवीय और सुधारात्मक दृष्टिकोण का सबसे बड़ा उदाहरण है। उन्होंने जेल को केवल दंड देने का स्थान न मानकर, सुधार और पुनर्वास का केंद्र बनाया। उन्होंने कैदियों के लिए योग, ध्यान (विपश्यना), शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए। इन पहलों से कैदियों के व्यवहार में अभूतपूर्व सुधार आया और उन्हें समाज की मुख्य धारा में लौटने का अवसर मिला। उनके इस कार्य को वैश्विक स्तर पर सराहा गया और उन्हें रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसे अक्सर एशिया का नोबेल पुरस्कार कहा जाता है।

3. टेनिस कोर्ट से पुलिस सेवा तक:— जुनून की यात्रा

किरण बेदी एक बेहतरीन टेनिस खिलाड़ी भी थीं और उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट जीते। खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली एक महिला का पुलिस सेवा जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में आना उस समय एक असाधारण निर्णय था। उन्होंने अपनी शारीरिक और मानसिक दृढ़ता का उपयोग पुलिस बल में किया और यह साबित किया कि महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं। यह उनके जोश और देश सेवा के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

किरण बेदी के ये प्रेरक प्रसंग हमें सिखाते हैं कि सच्चा नेतृत्व केवल पद से नहीं, बल्कि ईमानदारी, साहस, करुणा और निस्वार्थ सेवा से आता है। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक व्यक्ति अपने दृढ़ संकल्प से समाज में गहरे और स्थायी बदलाव ला सकता है।

नरेन्द्र नाथ पटेल (स.अ.)

कम्पोजिट विद्यालय सुरहन, भदोही



प्रकृति - अमूल्य निधि

शिक्षण संवाद



नीम के पेड़ में हैं औषधीय गुण बड़े,
अमलतास के भी कम नहीं फायदे।
पेड़ जो अशोक का है दूर करे सारे शोक,
पीपल से सारे चर्म रोगों को मिटाइए।
दाद, खाज, खुजली से यदि परेशान हो तो,
छाल को पलाश की तुरंत आजमाइए।
चाहते हो आने वाली पीढियों को खुशी मिले,
चारों ओर हरे भरे बिरबे लगाइए।

शहर और सड़कों को ठंडा रखते हैं पेड़,
मिट्टी को बांधे रहती हैं जड़ें पेड़ की।
केला, आम, पीपल और वट वृक्ष पूजे जाते,
शीतलता देती हमें छांव घने पेड़ की।
फिर भी जंगलों को काट-काट प्रतिदिन,
खड़ी कर दी है मचान कंक्रीट की।
नहीं सुधरेंगे तो फिर याद बड़ी आएगी,
चीड़, देवदार और शीशम के पेड़ की।



डॉ हिमांशु अग्रवाल
सहायक अध्यापक
पू०मा०वि० गढी डहर
वि०ख०-एत्मादपुर, जनपद-आगरा



नेक सीख

शिक्षण संवाद

अगर मिले कहीं धरती खाली,
बन जाना तुम उसके माली ।
रंग बिरंगे पौध लगाकर
भर देना उसमें हरियाली ॥
दिखे कहीं भी बहता पानी,
तुरंत रोकना उसको तुम ।
बूंद बूंद बचा करके,
भरना सागर को तुम ॥
पॉलिथिन का सदा,
करना तुम बहिष्कार ।
पकड़ाना थैले को तुम,
पापा जाए जब बाज़ार ॥
ऐसे ही छोटे कामों से,
कर सकते हो प्रदूषण दूर ।
अपनी प्यारी धरती में तुम,
भर सकते हरियाली का नूर ॥

रेनू वर्मा

सहायक अध्यापिका
यॅ.पी.एस. पसियापुरा
स्वार, रामपुर



श्री अटल बिहारी वाजपेई

को समर्पित रचना।



शिक्षण संवाद

मातृभूमि के सच्चे नायक, अटल आपकी वाणी थी।
कविताएं गीतों के गायक, अटल आपकी वाणी थी।

प्यार बसाकर जन जन में, सदा सदा सतकार किया।
दीन दया की सेवा करके, सदियों से उपकार किया।
सबको एक तुला में समझा, ऊंच नीच नहीं बैर किया।
पूरे जीवन काल प्रकृति पर, उदय पूर्व का सैर किया।
सबको देखा एक नजर से, कैसी गजब कहानी थी।
मातृभूमि के सच्चे नायक, अटल आपकी वाणी थी।



जनता की सेवा करने को, प्रजाजन का परिवार मिला।
भारत माता की भूमि को, अवसर जन अधिकार मिला।
कदम मिलाकर चलना होगा, यही एक उपदेश दिया।
भारत गौरव शाली होकर, विश्वगुरु अखिलेश किया।
वंदन ऐसे जन नायक को, तनिक नहीं मनमानी थी।
मातृभूमि के सच्चे नायक, अटल आपकी वाणी थी।

राजनीति के चतुर सिपाही, नूतन सार जगत रचते।
संसद की गरिमा हो शोभित, कविता गीत गज़ल पढ़ते।
बालकाल से ही नव उर्जा, राजनीति के बनकर ज्ञाता।
धन्य आपके मातृ पिता हों, भारत गौरव नित गाता।
राष्ट्र प्रेम की बातें करना, नित दिनचर्याहित ठानी थी।
मातृभूमि के सच्चे नायक, अटल आपकी वाणी थी।

सुख दुख संबल प्रेरणा, सबसे हटकर वह बेटा था।
देश विदेश में बहुचर्चित, वो भारत रत्न प्रणेता था।
नहीं किसी से तनिक लड़ाई, कानून को लोहा माना।
वो सपने साकार हुए सब, जो उसने मन में ठाना।
लोकहित और संस्कृति की, सदा सदा कल्याणी थी।
मातृभूमि के सच्चे नायक, अटल आपकी वाणी थी।

अटल आपकी याद में डूबा, शराबोर हुई आंखें हैं।
किन शब्दों में भाव प्रकट हो, धुंधली सी वो रातें हैं।
सुमन सुशोभित शब्द भाव के, नमन नित ये नीर करें।
ईश्वर से नित विनती करता, प्रभु शरण रज पीर हरे।
अटल आपकी यादें आतीं, हर एक गीत सुहानी थी।
मातृभूमि के सच्चे नायक, अटल आपकी वाणी थी।

नवीन कुमार भट्ट "नीर"

जिला उमरिया मध्यप्रदेश

प्रकृति मित्र कार्यशाला-2025

जनपद बरेली

शिक्षण संवाद

बेसिक शिक्षा विभाग बरेली एवं मिशन शिक्षण संवाद के संयुक्त तत्वावधान में प्रकृति मित्र / शिक्षक सम्मान समारोह-2025 का आयोजन कुंवर रिजॉर्ट बदायूं रोड, बरेली में किया गया। इस कार्यशाला में उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के 160 से अधिक शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। इन शिक्षकों के द्वारा **#EcoClubs4MissionLiFE #ecoclubformissionlife** के बेहतर क्रियान्वयन एवं मिशन शिक्षण संवाद के प्रकृति मित्र अभियान में प्रतिभाग कर अपने विद्यालय को हरा भरा और सुंदर बनाया गया है। कार्यशाला का उद्घाटन माननीय वन पर्यावरण राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार श्री अरुण कुमार सक्सेना जी के प्रतिनिधि श्री अनिल सक्सेना एडवोकेट एवं माननीय जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रश्मि पटेल जी के द्वारा किया गया। सर्वप्रथम माननीय अतिथियों के द्वारा एक पेड़ माँ के नाम 2.0 शासन के द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम के अंतर्गत वृक्षारोपण किया गया। माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के उपरांत शिक्षकों के द्वारा सरस्वती वंदना की गई। सरस्वती वंदना पर कथक नृत्य प्रस्तुत कर सभी प्रतिभागियों को अचंभित कर दिया गया। संविलियन विद्यालय पंडरी प्रेमराजपुर, आलमपुर जाफ़राबाद के बच्चों ने “प्रकृति मित्र एवं जल संरक्षण” के ऊपर नाटक प्रस्तुत कर सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा प्राप्त की। कार्यशाला में शिक्षकों ने प्रकृति मित्र के लिए जो बेहतर प्रयास किए हैं, उनकी वीडियो एवं पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन प्रदर्शित की। सभी प्रतिभागी शिक्षकों को मोमेंटो प्रशस्ति पत्र रोटरी क्लब बरेली ग्लोरी



की ओर से पंजीकरण किट एवं बच्चों के लिए पुरस्कार, #HDFCLife की तरफ से पौधे सम्मान स्वरूप दिए गए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय अध्यक्ष जिला पंचायत श्रीमती रश्मि पटेल जी ने कहा मैं इस कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष बनकर नहीं बल्कि वैलकम पर्सन बनकर आयी हूँ। प्रकृति शिक्षक सम्मान समारोह बहुत ही अच्छा कार्यक्रम रहा और मैं गम्भीरता से बताना चाहूंगी कि यह मेरे मन को छू गया है। मिशन शिक्षण संवाद ऐसा समूह है जहां हर शिक्षक कार्य करने के लिए हमेशा कार्यरत है। निरीक्षण के दौरान मैंने बिल्डिंग, शौचालय आदि की बहुत ही दयनीय स्थिति देखी थी। तब मैंने निर्णय किया कि जब तक रहूंगी, कोशिश करूंगी कि हर विद्यालय में शौचालय जरूर बनें।

आप सभी लोग शिक्षक हैं, गुरु बनिए। वास्तव में बच्चों की दशा और दिशा दोनों जरूर बदलेगी। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत बच्चों को बहुत कुछ पढ़ाया जाता है परंतु वे आसपास की वास्तविकता से है अभी भी दूर हैं। मैं खुश हूँ कि इस अवसर पर रुचि मैम को सस्वर कविताओं के लिए करताल कराई गई और विमल सर के द्वारा संस्था के लिये किये गये कार्यों को सराहा गया तथा ईश्वर की कृपा से प्रगति दर बढ़ता ही जाए ऐसी कामना करती हूँ।

इस अवसर पर अपूर्व कश्यप का नृत्य सेव वाटर की प्रस्तुति और योग कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की गई। मिशन शिक्षण संवाद के संस्थापक श्री विमल कुमार जी द्वारा समूह संचालकों के कार्य को सराहा गया। उन्होंने इस अभियान को आगे ले जाने की बात की तथा इस कार्यक्रम की क्यों आवश्यकता पड़ी और प्रकृति मित्र नाम क्यों पड़ा? इसके बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि 2016 से इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई। विगत वर्षों से पेड़ों को लगाया जा रहा है। फोटो खींचते रहे लेकिन पेड़ों का संरक्षण नहीं हो पा रहा था। इसके



फलस्वरूप अंतर मन की आवाज़ द्वारा इसकी शुरुआत की गई। उन्होंने मित्रता के द्वारा एक संदेश दिया कि प्रकृति मित्र बनने से मित्रता एक ऐसा सत्य आभास है जिसमें भेदभाव की गुंजाइश ही नहीं रहती। इसलिए हम सभी को प्रकृति मित्र बनने का प्रण लेना ही चाहिए जिससे 'सांसें हो रही कम' स्लोगन से हम निश्चित रूप से जीत सकेंगे। आओ हम प्रकृति मित्र अभियान के माध्यम से पृथ्वी को बचाने का संकल्प लेते हैं। वृक्षारोपण के साथ ही हमें संरक्षण पर काफ़ी काम करना पड़ेगा। "विनाश काले विपरीत बुद्धि" पंक्ति को सार्थक न करते हुए इस कार्यक्रम से प्रकृति के संरक्षण की ओर ले जाना ही होगा और वृक्षारोपण के साथ-साथ संरक्षण को भी आगे ले जाना है।

आदरणीय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित आदरणीय खंड शिक्षा अधिकारी आलमपुर जाफ़राबाद श्री सतीश वर्मा जी द्वारा भी कार्यक्रम की सराहना की गई। उन्होंने शिक्षकों को निरंतर एवं समय से कार्य पूरा करने को प्रेरित किया तथा समय-समय पर अच्छे कार्य को सोशल मीडिया के द्वारा प्रचार प्रसार के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश में जनपद बरेली को विभिन्न कार्यों में प्रथम स्थान पर रहने की सभी को बहुत-बहुत बधाई भी दी।

मिशन शिक्षण संवाद बरेली के जिला संयोजक रूपेन्द्र सिंह ने बताया कि मिशन शिक्षण संवाद सन 2017 से प्रकृति मित्र अभियान चला रहा है। इसके अंतर्गत हज़ारों की संख्या में शिक्षक इससे जुड़े हैं और प्रकृति के लिए बेहतर कार्य कर रहे हैं। इससे पूर्व मिशन शिक्षण संवाद के द्वारा रेड टेप मूवमेंट कार्यक्रम कई वर्षों तक चलाया गया जिसके अंतर्गत शिक्षक विद्यार्थी और अभिभावक पेड़ पौधों पर लाल रिबन अथवा धागा बांधकर



उसकी सुरक्षा की शपथ लेते हैं। इसके उपरांत कार्बन न्यूट्रल स्कूल कार्यक्रम चलाया गया। प्रकृति मित्र कार्यक्रम के चार चरण हैं। प्रथम चरण 15 जून से शुरू होता है जिसमें वृक्षारोपण के लिए गड्डों को तैयार कर उसमें खाद डालकर तैयार करना होता है। द्वितीय चरण 15 जुलाई से मानसून आने पर शुरू होता है जिसमें बनाए गए गड्डे में वृक्षारोपण किया जाता है। तृतीय चरण में लगाए गए पौधों का संरक्षण करते हुए उनकी देखभाल की जाती है। चतुर्थ चरण अक्टूबर माह में प्रारंभ होता है जिसमें लगाए गए पौधे को संरक्षित करने की शपथ ली जाती है। इन चारों चरणों में प्रतिभाग करने वाले शिक्षकों विद्यार्थियों अभिभावकों को प्रकृति मित्र प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। प्रकृति के लिए निरंतर श्रेष्ठ कार्य करने के लिए ऐसे शिक्षकों को चुनकर कार्यशाला में बुलाया गया है और उन्हें सम्मानित किया जा रहा है। जिससे अन्य शिक्षक भी प्रेरित होकर प्रकृति के लिए सर्वश्रेष्ठ कार्य करें और सभी मिलकर इस धारा को निर्मल स्वच्छ और हरा-भरा बनाएं। रूपेंद्र सिंह ने बताया कि शासन द्वारा चलाए जा रहे इको क्लब फॉर्मेशन लाइफ के बेहतर क्रियान्वयन के लिए भी मिशन शिक्षण संवाद की टीम कार्य कर रही है। परियोजना द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों की पीडीएफ़ इत्यादि बनाकर शिक्षकों को भेजी जाती है, जिससे कि विद्यालयों के बच्चे ड्राइंग कंपटीशन इत्यादि में हिस्सा ले सकें और पर्यावरण के प्रति जागरूक हो सकें।

कार्यक्रम में प्रीति शर्मा, सुरेश कुमार, महावीर प्रसाद, अनिल कुमार गंगवार, अर्पण आर्य, राखी सक्सेना, शबीना परवीन, अशोक गुर्जर, रुचि शर्मा, मधुरेश दीक्षित, चित्रसेन गंगवार, जितेंद्र सिंह, आशीष सिंह, महेंद्र गंगवार, अवनीश उपाध्याय, शिखा अग्रवाल, राखी गंगवार सहित मिशन शिक्षण संवाद की समस्त टीम का विशेष सहयोग रहा।

संकलन—

टीम मिशन शिक्षण संवाद



‘शिक्षण संवाद’ जून 2025

23



सहजन

शिक्षण संवाद

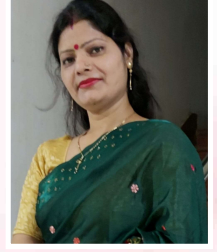
सहजन का पौधा, जिसे मोरिंगा भी कहा जाता है, एक बहुपयोगी पौधा है। जिसके लगभग सभी भाग, जैसे फल, फूल, पत्तियाँ, और छाल, विभिन्न प्रकार से उपयोग किए जाते हैं। यह पौधा पोषक तत्वों से भरपूर होता है और इसे पारंपरिक चिकित्सा में कई बीमारियों के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

सहजन के पौधे की मुख्य विशेषताएं—

सहजन में विटामिन, खनिज, और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में 300 से अधिक बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। जैसे कि मधुमेह, हृदय रोग, और त्वचा रोगों में। इसके फल, फूल, पत्तियाँ, और छाल का उपयोग भोजन, दवा, और औद्योगिक कार्यों में किया जाता है। यह बिना किसी विशेष देखभाल के आसानी से उगाया जा सकता है। यह जैव विविधता संरक्षण और आवास बहाली में भी मदद करता है। सहजन के बीज और तेल का उपयोग त्वचा की देखभाल के लिए किया जाता है। सहजन में मौजूद गुण वजन कम करने में भी मदद कर सकते हैं। सहजन में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो सूजन को कम करने में मदद करते हैं।



मोहित राही (स०अ०)
प्रा० वि० पापड़ी मिलक
ब्लॉक व जनपद – अमरोहा



एक पेड़ माँ के नाम

शिक्षण संवाद

सुंदर स्वरूप माँ वसुन्धरा का,
आँचल जिसका नीला आकाश ।
वृक्ष ,समीर और नीर जहां पर,
रवि का हो वह दिव्य प्रकाश ॥

इन सबसे हम जीवन पाते,
चुका सकें न इनका मोल ।
आओ सुरक्षित करें प्रकृति को,
यह धरोहर है अनमोल ॥
माँ और प्रकृति दोनों ही ,
जीवन का हैं ,मूल आधार ।

अगर किया न इनके लिए कुछ,
तेरा जीवन है बेकार ॥
अवसर है फ़र्ज निभाने का,
जीवन साकार बनाने का ।
वृक्ष लगाकर, इन्हें बचाकर,
माँ का कर्ज चुकाने का ॥
अगर सजग न हुआ अब भी तू,
धरती माँ का क्रोध झेल न पाएगा ।
वर्तमान से भी भयंकर,
भविष्य का परिणाम आएगा ॥
ये एक पहल जो है दर्शाता,
इनके प्रति सम्मान, समर्पण का ।

यह समय है ,अब संकल्प करो,
तुम स्थाई स्मृति बनाने का ॥
तुम जाग उठो जग के प्रहरी ,
समृद्ध भविष्य निर्माण करो ।
छोड़ जग के सारे काज,
एक पेड़ माँ के नाम करो ॥
ये एक प्रयास तेरा भविष्य में ,
सबको सब कुछ दे जाएगा ।
एक पेड़ लगा तू माँ के नाम,
यह अमिट स्मृति बन जाएगा ॥

विभा पांडे

प्राथमिक विद्यालय कुल्हनमऊ खास
सिकरारा जौनपुर





एक पेड़ माँ के नाम

शिक्षण संवाद

माँ की स्मृति में चलो लगाएं एक पेड़,
इस एहसास के साथ,
कि शायद बड़ा होकर यह दे माँ सी छाया,
थका होने पर अपने अंक में समेटे ।
इसकी घनी छाया मां के होने का आभास कराए,
यही आस लेकर चलो एक पेड़ लगाएं ।
माँ जैसी ही सांसों तो मिलती हैं इससे,
तो क्यों न हम पेड़ों को बचाएं
अपने घर के बाहर, एक सुंदर पेड़ लगाएं ।
अपने मनोभावों को पिरो दें उसे सृजित करने में,
नयी पीढ़ी भी तो सांसों पाएगी इसी पेड़ से ।
इसकी अनुपस्थिति शायद बड़ी भयावह होगी,
तो चलो हम सब मिलकर माँ के नाम एक पेड़ लगाएं ।
जननी जन्म देती, प्रकृति जीने का आलम्बन,
प्रकृति से सौन्दर्य निखरता धरा का,
जननी जन्मभूमि का उपकार अमूल्य है इस जग में,
माँ के आलम्बन को स्मृति में संजोकर,
इस धरा के संरक्षण हेतु
चलो हम सब मिलकर लगाएं एक पेड़ ।
माँ की स्मृति में चलो लगाएं एक पेड़ ।



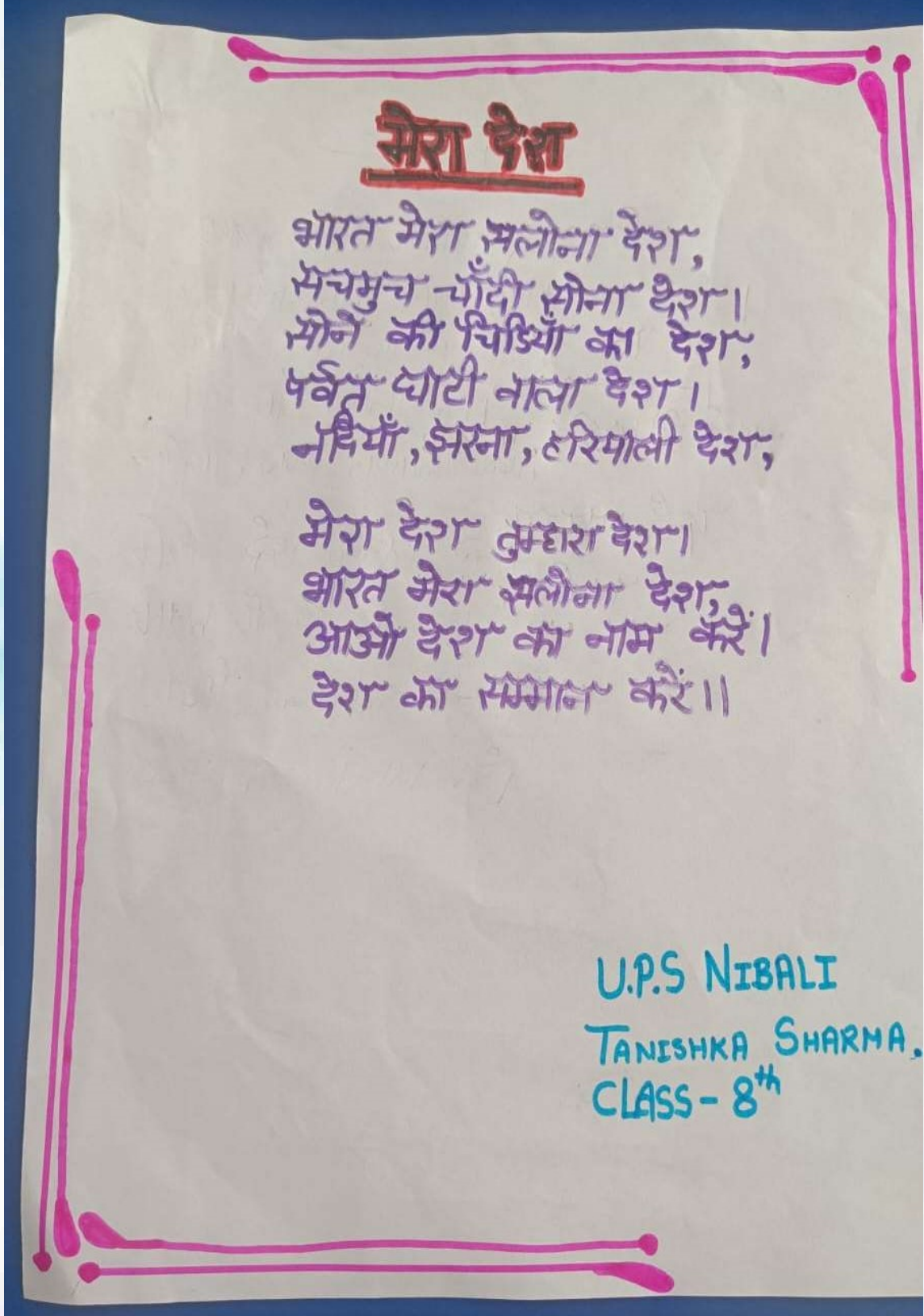
उत्तमा चतुर्वेदी

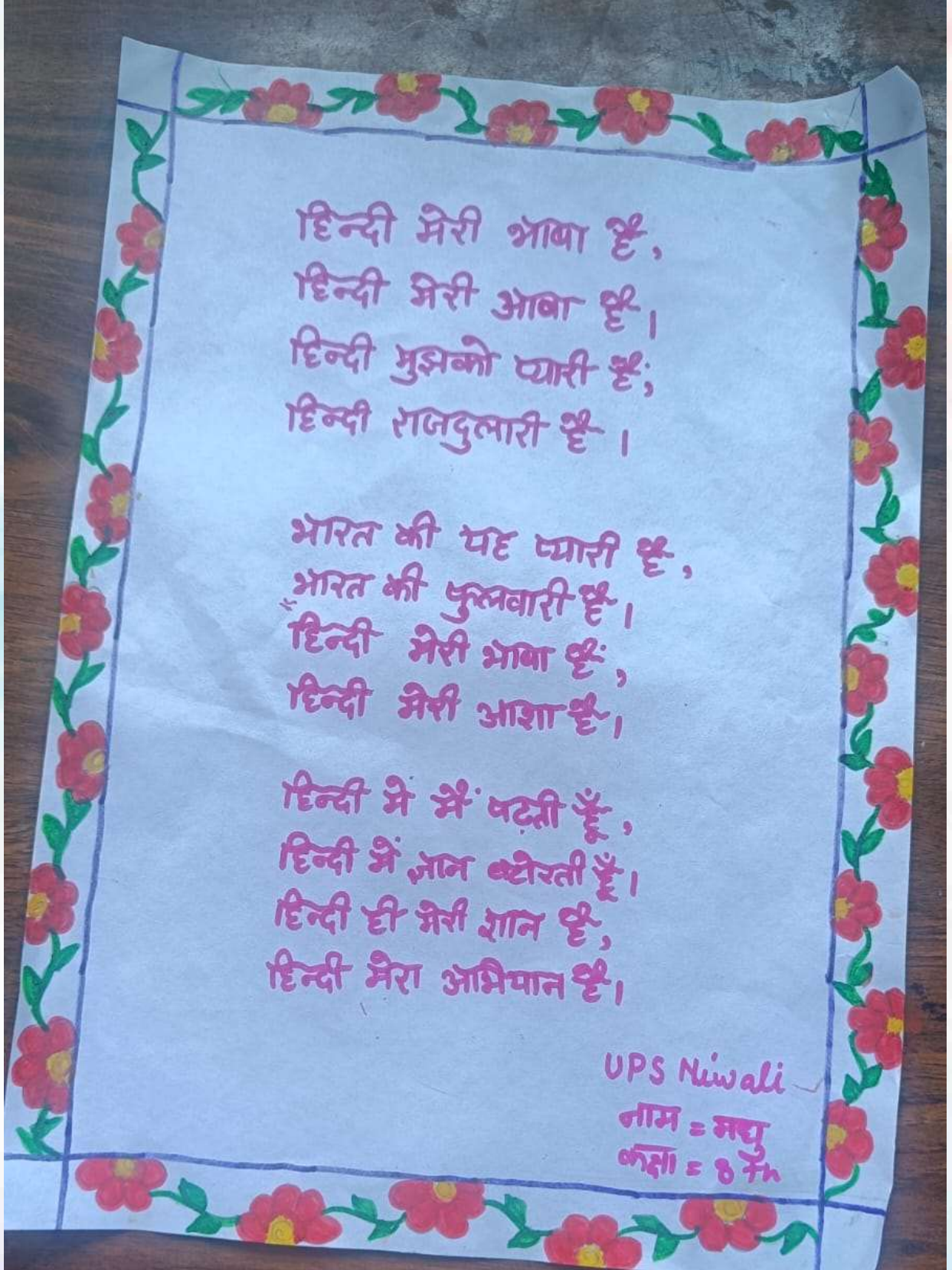
प्र. अ. प्रा. वि. बिसावां
सिकरारा जौनपुर



मेरा देश

शिक्षण संवाद







विज्ञान की लौ जब जलती है,
अंधकार की चादर हटती है।
सोच नयी जब पंख फैलाती है,
आशा की किरण चमकती है।।

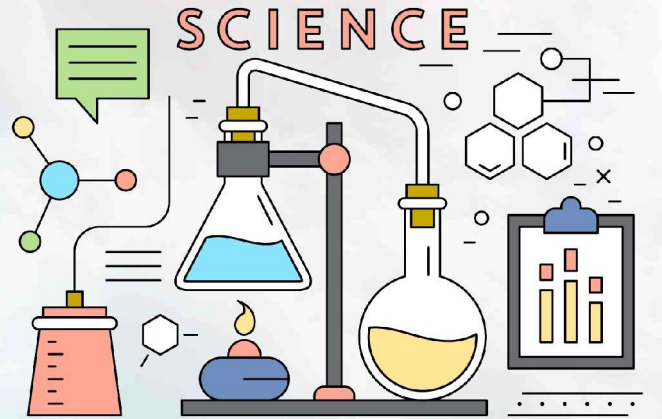
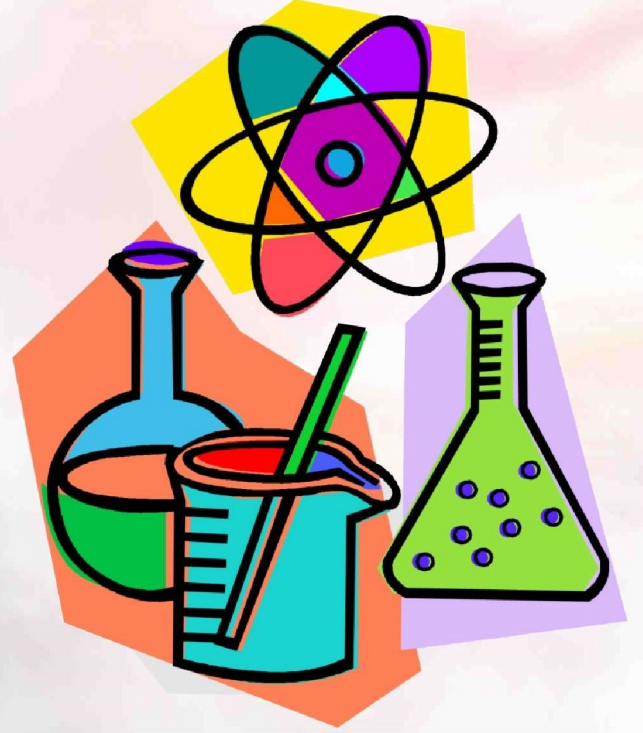
नवाचार से सब सृजन हुआ है,
हर यंत्र नया एक चिह्न हुआ है।
चाँद-सितारों को छूने की बात,
अब हकीकत बनती दिन-रात।।

रोटी, कपड़ा, ज्ञान की चाह,
सबमें विज्ञान दिखाता राह।
चिप में दुनिया, स्क्रीन पे ज्ञान,
बिन पंखों के उड़ानें महान।।

बिजली, रोबोट, क्लोनिंग की बात,
इनोवेशन बदल रहा हर हालात।
ए आई से लेकर स्पेस के पार,
हर खोज में छिपा भविष्य का सार।।

जब बाल मस्तिष्क में जगे सवाल,
तब विज्ञान कर देता है कमाल।
'क्यों' और 'कैसे' का चढ़े जुनून,
तब नवाचार का जन्मे मजमून।।

चलो सब मिलकर दीप जलाएँ,
नव विचारों को आकार दिलाएँ।
भारत बने आविष्कार की खान,
विज्ञान पर हो सबको अभिमान।।



डॉ० वंदना खंडूरी

(प्रवक्ता जीव विज्ञान)

श्री गुरु नानक पब्लिक बालक इंटर कॉलेज
चुक्खूवाला, ब्लॉक- रायपुर,
जनपद- देहरादून
(उत्तराखण्ड)

विश्व रक्तदाता दिवस



शिक्षण संवाद

हर वर्ष 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस (**World Blood Donor Day**) मनाया जाता है। यह दिन उन सभी निःस्वार्थ रक्तदाताओं को सम्मानित करने और धन्यवाद देने के लिए समर्पित होता है, जो अपनी इच्छा से रक्तदान कर दूसरों की जान बचाते हैं। यह दिन लोगों को रक्तदान के महत्व के प्रति जागरूक करने का भी कार्य करता है।

उद्देश्य—

विश्व रक्तदाता दिवस का मुख्य उद्देश्य सुरक्षित रक्त और उसके घटकों की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना है। यह दिवस लोगों को यह समझाने का प्रयास करता है कि रक्तदान न केवल एक मानवता की सेवा है, बल्कि यह एक जीवनदायी कार्य है जो किसी अजनबी की जिंदगी बचा सकता है।

महत्व—

रक्तदान एक महान कार्य है क्योंकि विज्ञान के इस युग में भी रक्त का कोई विकल्प नहीं है। दुर्घटना, ऑपरेशन, प्रसव, थैलेसीमिया, कैंसर और अन्य गंभीर बीमारियों के रोगियों को समय-समय पर रक्त की आवश्यकता पड़ती है। यदि समय पर रक्त न मिले, तो कई बार मरीज की जान भी जा सकती है। एक यूनिट रक्त से तीन लोगों की जान बचाई जा सकती है।

थीम—

हर वर्ष इस दिन की एक विशेष थीम होती है, जो लोगों को जागरूक करने के लिए चुनी जाती है। यह थीम रक्तदान के महत्व और इससे जुड़ी जिम्मेदारियों को समझाने में मदद करती है।

रक्तदान के लाभ—

रक्तदान केवल प्राप्तकर्ता के लिए ही नहीं, दाता के लिए भी लाभकारी होता है। इससे शरीर में नई रक्त कोशिकाएं बनती हैं और स्वास्थ्य अच्छा रहता है। साथ ही यह आत्मसंतोष की भावना देता है कि हमारे द्वारा किसी की जान बची।

मेरे द्वारा रक्तदान —

एक स्वस्थ वयस्क व्यक्ति प्रत्येक तीन माह के अंतराल पर रक्तदान कर सकता है। मैं अपने 45 वर्ष के जीवनकाल में अभी तक 42 बार रक्तदान कर चुका हूँ। मुझे इस कार्य से कभी कोई कमजोरी महसूस नहीं हुई। वर्ष में 4 बार नियमित रक्तदान करता हूँ।

निष्कर्ष

विश्व रक्तदाता दिवस हम सभी को यह प्रेरणा देता है कि हम नियमित रूप से रक्तदान करें और दूसरों की जिंदगी बचाने में योगदान दें। यह एक छोटी-सी भेंट है, जो किसी के लिए जीवन बन सकती है। आइए, इस नेक कार्य में भागीदार बनें और समाज में सकारात्मक बदलाव लाएँ।

नारा- “रक्तदान - जीवनदान है, यह सबसे बड़ा इंसानियत का काम है!”



जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
पी० एम० श्री प्रा० वि० धनौरा
सिल्वर नगर-1
वि० क्षे० व जनपद- बागपत

जो सींचते हैं अपने लहू से दूसरों के प्राण, उन सेवादारों के जब्बे को सलाम

● **बढ़ती, जोमाना और धनीयों के रक्तदाता नई इबारत**
 ● **बढ़ती मान संभार परिवार में हुए हादसों में घायलों को रक्त देने के लिए तैयार हो गए रक्तदाताओं में**

जितेन्द्र कुमार (स०अ०) की कहानी है कि वह रक्तदान करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने बताया कि रक्तदान करने के लिए तैयार होना एक अच्छा काम है। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने के लिए तैयार होना एक अच्छा काम है। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने के लिए तैयार होना एक अच्छा काम है।

● **रक्तदान करने के लिए तैयार होना एक अच्छा काम है।**

● **रक्तदान करने के लिए तैयार होना एक अच्छा काम है।**

● **रक्तदान करने के लिए तैयार होना एक अच्छा काम है।**



एडिशन मशीन

शिक्षण संवाद

नवाचार का नाम— एडिशन मशीन

नवाचार की आवश्यकता— कक्षा कक्ष में **TLM** का उपयोग करने से अध्यापन रुचिकर होता है, बच्चों को सीखना आनंदित लगता है तथा **TLM** के द्वारा पढ़ाने पर बच्चों में सम्बंधित अवधारणा के प्रति समझ विकसित होती है।

कक्षा / विद्यालय में प्रयोग— कक्षा / विद्यालय में **TLM** का प्रयोग करने से गतिविधि आधारित अध्यापन से बच्चों को कक्षा में आनंद के साथ सीखने को मिलता है। जब हम अपने अध्यापन में इस **TLM** का उपयोग करेंगे तो बच्चे की विषय के प्रति जिज्ञासा बढ़ेगी और सीखने को मिलेगा। जिससे हर बच्चा कक्षा शिक्षण में भाग लेगा और विद्यालय की उपस्थित पर भी प्रभाव पड़ेगा

आवश्यक सामग्री— कुछ रंगीन शीट, गोंद, दफती, स्कैच पेन, कैंची, थर्माकोल इत्यादि।

अनुप्रयोग— कक्षा कक्ष में **TLM** का उपयोग करने से अध्यापन रुचि पूर्ण तो होगा ही साथ ही बच्चे जिज्ञासु बनेंगे और वे अवधारणा को आसानी से समझ पाएंगे। इसमें बच्चों कंचों / कंकड़ के माध्यम से स्वयं करके जोड़ की अवधारणा को समझते हैं। यह कम बुद्धि लब्धि वाले बच्चों के लिए लाभदायक होता है। जिसका प्रयोग कर के बच्चे जोड़ की अवधारणा को आसानी से समझ पाएंगे।

लाभ— बच्चे स्वयं करके सीखेंगे एवं उनमें जोड़ की समझ विकसित होगी, जो स्थाई होगी तथा बच्चों अपने दैनिक जीवन में उससे सम्बंधित समस्याओं का हल स्वयं कर पाएंगे।



लर्निंग आउट कम—

1. छात्रों की उपस्थिति में वृद्धि
2. नेतृत्व क्षमता का विकास
3. सामुदायिक सहभागिता
4. रटने की प्रवृत्ति में कमी
5. कम बुद्धि लब्धि वाले बच्चों के लिए सहायक

अंजू लता पटेल (स. अ.)

पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय करसड़ा
वि.ख.- मझवा,जनपद - मिर्जापुर





बिखरे मोती

शिक्षण संवाद

जीवन के कठिन मार्गों में, दुश्वारियों में मानव को कविताएँ भी हौसला देती हैं। कविताओं में वो शक्ति है जो दो पंक्तियों से भी मानव मन को बदल दे। किसी के घमण्ड को समाप्त कर दे तो किसी को सही राह दिखा दे। किसी टूटे हुए इंसान को सम्बल दे दे तो किसी निराश व्यक्ति के जीवन में उत्साह ले आए। आज जब समाज में अवसाद की बयार चली हुई है। तब लगता है कि कविताओं से दूरी भी इस स्थिति के लिए उत्तरदायी है। कविताओं का समाज को सही दिशा देने में सदैव से योगदान रहा है। इसलिए आवश्यक है कि आज के बच्चों के मन में भी कविताओं के प्रति प्रेम जागृत किया जाए।

जितेन्द्र कुमार जी के काव्य संकलन “बिखरे मोती” से हाल ही में परिचय हुआ। बच्चों के मन को लुभाती ये कविताएँ वयस्कों को भी हर्षाती हैं। इस संकलन में जितेन्द्र जी ने विभिन्न विषयों पर अत्यन्त रोचक और भाव— विभोर कर देने वाली कविताएँ लिखी हैं। “मेरा फर्ज” कविता जहाँ देशभक्ति और कर्तव्यबोध की भावना जगाती है। वहीं जनपदों के नाम पर आधारित कविताएँ ज्ञान में वृद्धि करती हैं। जितेन्द्र जी के गृह जनपद बागपत के बारे में भी इस कविता से ही पता चला कि बागपत जनपद कभी व्याघ्रप्रस्थ के नाम से प्रसिद्ध था। “त्योहारों का मौसम”



कविता के बारे में तो क्या ही कहें। कम शब्दों में कई त्योहारों और उनकी विशेषताओं को साझा किया है जो स्मरण करने में भी उपयोगी है।

विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिए केवल कहानियों ही नहीं अपितु कविताओं में भी उनकी रुचि जगाना आवश्यक है। बालमन को अच्छे से समझकर उनके अनुरूप कविताएँ गढ़ने वाले जितेन्द्र जी को काव्य संकलन “बिखरे मोती” के लिए बहुत— बहुत बधाई। हम आशा करते हैं कि आप सभी के बाल पुस्तकालय में बिखरे मोती शीघ्र ही सम्मिलित होगी।

प्रांजल सक्सैना
बरेली



पानी (बाल कहानी)

शिक्षण संवाद

एक दिन मोनी अपनी सहेली टोनी के साथ खेल रही थी। खेलते-खेलते मोनी को प्यास लगी। उसे पास में एक नल दिखायी दिया। नल के पास जाकर उसने टॉटी खोली। उसने खूब मुँह धोया, पानी पिया और पानी पीने के बाद फिर से खेलने लगी।

टोनी ये सब देख रही थी। उसने मोनी से कहा— “लगतता है, तुम टॉटी बन्द करना भूल गयी हो! खेल के चक्कर में कम से कम टॉटी तो बन्द कर देती! खेल के चक्कर में टॉटी बन्द करना भी भूल गयी। बेकार में बहुत पानी बह रहा है।”

मोनी ने कहा— “तुम को गलतफहमी हो गयी है कि मैं जल्दी में टॉटी बन्द करना भूल गयी हूँ। ऐसा मैंने जानबूझ कर किया है।”

“पर क्यों?”

“वह इसलिए कि अभी बहुत खेलना है, फिर प्यास लगेगी। पानी जब बहता रहेगा तो ठण्डा पानी पीने को मिलेगा। मुझे भी और तुम्हें भी। समझी मेरी चतुराई?”

“ये चतुराई नहीं गन्दी आदत है। ये बहुत गलत काम है। मैं तुम्हें ये गलत काम नहीं करने दूँगी। मैं जा रही हूँ टॉटी बन्द करने। तुम मेरे साथ खेलो या न खेलो, पर ये पानी हम फिजूल बहने नहीं देंगे। पानी से ही हमारा जीवन है। हम सबको पानी की कीमत समझना चाहिए।”

इतना कहकर टोनी ने टॉटी बन्द कर दी और घर की ओर जाने लगी।

मोनी को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने तुरन्त मोनी से माफी माँगी और दोबारा ऐसी गलती न करने का वादा किया। साथ ही साथ पानी बचाने का भी संकल्प लिया। टोनी ने मोनी को माफ कर दिया और दोबारा दोनों खुशी-खुशी खेल खेलने लगीं।

शिक्षा

पानी अनमोल है। हमें इसका मोल समझना होगा। व्यर्थ में पानी को बर्बाद करना बुरी बात है।



शमा परवीन,
बहराइच

इंडोर शैक्षणिक गतिविधियाँ

शिक्षण संवाद

6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के लिए इंडोर शैक्षणिक गतिविधियाँ (Indoor Educational Activities) इस तरह से आयोजित की जा सकती हैं कि वे बच्चों के ज्ञान, कौशल, सृजनात्मकता और सहयोगात्मक व्यवहार को बढ़ावा दें। नीचे बताया गया है कि ये गतिविधियाँ कैसे होनी चाहिए और बच्चों के लिए किस प्रकार लाभकारी होती हैं।

इंडोर शैक्षणिक गतिविधियों के प्रकार (Activities)

1. शैक्षणिक खेल (Educational Games)

उदाहरण: शब्द-पहेली (word puzzle), गणितीय ब्लॉक्स, क्विज, सुडोकू
लाभ:— सोचने-समझने की क्षमता, भाषा विकास, तर्कशक्ति

2. समूह गतिविधियाँ (Group Activities)

उदाहरण: नाटक, कहानी निर्माण, रोल-प्ले, विचार-विमर्श
लाभ: संवाद कौशल, सहयोग भावना, नेतृत्व विकास

3. प्रोजेक्ट आधारित कार्य (Project Work)

उदाहरण: विज्ञान मॉडल बनाना, सामाजिक विषयों पर प्रेजेंटेशन
लाभ: अनुसंधान क्षमता, रचनात्मकता, विषय-वस्तु की गहरी समझ

4. कला और शिल्प (Art & Craft)

उदाहरण: कोलाज बनाना, पोस्टर बनाना, मिट्टी के खिलौने
लाभ: सृजनात्मकता, एकाग्रता, हाथ-आँख समन्वय

5. पठन व लेखन गतिविधियाँ

उदाहरण: पुस्तक पठन, कहानी लेखन, संवाद लेखन
लाभ: भाषा कौशल, कल्पनाशक्ति, लेखन क्षमता

6. शैक्षिक वीडियो व ऑडियो सुनना

उदाहरण: वैज्ञानिक दस्तावेजी फिल्में, प्रेरक कहानियाँ, ऑडियो क्लास
लाभ: श्रवण क्षमता, अवधारणात्मक समझ, रुचि में वृद्धि



बच्चों के लिए लाभ (Benefits)

ज्ञान वृद्धि विषयों को रोचक तरीकों से समझना, संचार और भाषा विकास संवाद करते समय भाषा का सही प्रयोग, सामूहिक सहयोग समूह कार्य में भागीदारी व सामंजस्य, रचनात्मकता का विकास कल्पना के जरिए नये विचार उत्पन्न करना, आत्मविश्वास व नेतृत्व क्षमता प्रस्तुति और नेतृत्व करने का अवसर, समस्या समाधान कौशल खेल और चुनौतियों में हल ढूँढने की क्षमता

निष्कर्ष:—

6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए इंडोर शैक्षणिक गतिविधियाँ न केवल ज्ञानवर्धक होती हैं, बल्कि वे उनके व्यक्तित्व विकास, सामाजिक कौशल और रचनात्मक सोच को भी मजबूत करती हैं। शिक्षकों और अभिभावकों को चाहिए कि वे इन गतिविधियों को समय-समय पर योजना के साथ करवाएँ ताकि शिक्षा रुचिकर और प्रभावी बन सके।

आनन्द नारायण पाठक "अभिनव"

शिक्षक एवं साहित्यकार, कम्पोजिट विद्यालय खाचकीमई,
विकास खण्ड— कड़ा, जनपद— कौशाम्बी।



21 जून 2025 योग पर निबन्ध

शिक्षण संवाद

1. योग का मेरे जीवन पर प्रभाव— योग भारत की प्राचीन विधा है, जिससे शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। मैंने भी अपने जीवन में योग को अपनाया है। हर सुबह मैं योग करती हूँ। इससे मेरा शरीर मजबूत रहता है और मैं दिन भर ताज़गी महसूस करती हूँ। पढ़ाई में मन लगता है और मुझे थकान कम महसूस होती है। योग करने से मेरे पेट की परेशानी भी कम हो गई है। योग ने मेरे जीवन को बेहतर बनाया है। अब मैं पहले से ज्यादा खुश और स्वस्थ महसूस करती हूँ। हमें रोज योग करना चाहिए।

2. योग का मानसिक रोगों पर प्रभाव — आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में लोग तनाव, चिंता और मानसिक रोगों से परेशान रहते हैं। ऐसे समय में योग मानसिक रोगों से बचाने में मदद करता है। योग और ध्यान करने से मन शांत रहता है। प्राणायाम करने से मस्तिष्क को अधिक ऑक्सीजन मिलती है, जिससे चिंता, डर और उदासी कम होती है। योग करने वाले लोग ज्यादा आत्मविश्वासी और खुश रहते हैं।

कई डॉक्टर और वैज्ञानिक भी अब यह मानते हैं कि नियमित योग से डिप्रेशन की समस्याएँ कम होती हैं। स्कूलों में बच्चों को ध्यान और योग सिखाया जा रहा है। ताकि वे मानसिक रूप से मजबूत बनें। यह बच्चों के लिए बहुत ही लाभकारी है। मेरे विद्यालय में प्रतिदिन योगासन सिखाया जाता है। जिसमें पद्मासन, पश्चिमोत्तासन, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, ताड़ासन, वृक्षासन, धनुरासन, चक्रासन, सूर्य नमस्कार, त्रिकोणासन। ऐसे कई आसन हैं। सभी को क्रमशः प्रतिदिन एक-एक आसन कराया जाता है। योग मानसिक रोगों से बचने का एक सरल और प्रभावी उपाय है। हर किसी को इसे अपनाना चाहिए।



3. योग का वैज्ञानिक महत्व

योग सिर्फ एक आध्यात्मिक अभ्यास नहीं है, बल्कि इसका वैज्ञानिक आधार भी है। यह शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन बनाता है। योग का अर्थ होता है – जोड़ना, योग आत्मा और परमात्मा को मिलाने का एक माध्यम है। योग शब्द संस्कृत के 'युज्' धातु से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'जुड़ना' या 'एकजुट होना'। योग का अभ्यास शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने, और चेतना से जोड़ने का एक तरीका है। योग का अभ्यास इन अर्थों को दर्शाता है, और इसका उद्देश्य मन और शरीर के बीच संतुलन और सामंजस्य स्थापित करना है। विज्ञान कहता है कि योग करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और मोटापे जैसी बीमारियों को नियंत्रित करता है। प्राणायाम से फेफड़े मजबूत होते हैं और ध्यान करने से मस्तिष्क की कार्यक्षमता बढ़ती है।

वैज्ञानिक अध्ययन से यह पता चला है कि ध्यान करने से मस्तिष्क में पॉजिटिव बदलाव आते हैं। योग करने से कई लाइलाज बीमारियाँ भी ठीक होती हैं और लोगों की जीवन प्रत्याशा भी बढ़ती है। स्वस्थ एवं सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। योग एक वैज्ञानिक पद्धति है जो हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में मदद करती है। हमें इसे नियमित जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।

4. एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए— 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' का मतलब है पूरी दुनिया का स्वास्थ्य एक साथ जुड़ा हुआ है। इसमें योग की बड़ी भूमिका हो सकती है। एक शिक्षक होने के नाते जितना मैंने अनुभव किया है कि योग ही वह माध्यम है जिससे बच्चे और बूढ़े सभी स्वस्थ रहते हैं। बच्चों के लिए भी योगासन उतना ही आवश्यक है, जितना वृद्ध लोगों के लिए। बच्चों के लिए आवश्यक है, क्योंकि उनकी लंबाई की वृद्धि, ज्ञान, बुद्धि विवेक आदि को बढ़ाने एवं संतुलित करने में योग का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जो बैठने के आसन होते हैं, उनका पालन करने से विद्यार्थी अधिक ध्यान एकाग्र कर पढ़ाई में मन लगाता है और मानसिक संतुलन भी अच्छा बना रहता है। शरीर में लचीलापन रहता है और मन और शरीर सदैव स्वस्थ रहता है। क्योंकि कहा गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इसी प्रकार बड़े- बूढ़ों के लिए भी योग आवश्यक है। क्योंकि नियमित योग करने से बढ़ती हुई उम्र में शरीर निरोगी रहता है और हड्डियाँ विशेष या रक्त विकार संबंधी जो भी रोग होते हैं, वह सब दूर रहते हैं। तनाव, अनिद्रा, ब्लड प्रेशर, शुगर आदि घातक बीमारियों से लोग दूर रहते हैं और अपने शरीर को स्वस्थ रखते हैं। इस प्रकार योग को संपूर्ण पृथ्वी निवासियों को अपनाकर स्वस्थ रहना चाहिए। यही हमारे योग का मुख्य उद्देश्य है। योग न केवल व्यक्ति को स्वस्थ बनाता है बल्कि समाज और देश को भी। जब सभी लोग स्वस्थ होंगे, तो पूरी पृथ्वी स्वस्थ होगी। योग से हम प्रकृति के करीब आते हैं, प्रदूषण से दूर रहते हैं और संतुलित जीवन

जीते हैं।

संयुक्त राष्ट्र (UNO) ने भी योग के महत्व को समझा और 21 जून को "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" घोषित किया। आज पूरी दुनिया योग कर रही है, जिससे मानवता लाभ ले रही है।

—निष्कर्ष—

अगर हम सब मिलकर योग को अपनाएँ, तो न केवल हम स्वस्थ रहेंगे बल्कि पूरी पृथ्वी पर स्वास्थ्य और शांति फैलेगी। यही 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' का असली मतलब है।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय अमौली,
विकास खण्ड— अमौली,
जनपद— फतेहपुर।



मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमर:— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने-सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।



1. फेसबुक पेज: <http://m.facebook.com/shikshansamvad/>
2. फेसबुक समूह: <http://www.facebook.com/groups/118010865464649>
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग: <https://www.shikshansamvad.blogspot.in>
4. Twitter@shikshansamvad): <https://twitter.com/shikshansamvad>
5. यू-ट्यूब: <https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig>
6. व्हाट्सएप्प नं० : **9458278429**
7. ई मेल: shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइट: www.missionshikshansamvad.com



विमल कुमार

टीम मिशन शिक्षण संवाद